A.V. EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE DEGLOOR
Dist.Nanded

ISSN 2349-638x
Impact Factor 5.707

# AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

PEER REVIEW & INDEXED JOURNAL
Email id : aiirjpramod@gmail.com
www.aiirjournal.com

## SPECIAL ISSUE No. 45

Executive Editor
Dr. S.M. Maner
Principal
Tuljabhavani Mahavidyalaya,
Tuljapur, Dist. Osmanabad (M. S.)

Co-Editor
Prof. V. H. Chavan
Dept. of Hindi
Tuljabhavani Mahavidyalaya,
Tuljapur, Dist. Osmanabad (M. S.)

Chief Editor
Prof. Pramod Tandale

Dr. Anil Chidrawar
I/C Principal
A.V. Education Society's
Degloor College, Degloor Dist.Nanded

| Sr.No. | Author Name | Title of Article / Research Paper | Page No. |
|---|---|---|---|
| 42. | डॉ उत्तम राजाराम आळतेकर | संवेदना का सरोकार कराती इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविता | 108 |
| 43. | प्रा. सूर्यकांत रामचंद्र चव्हाण | बाज़ारवाद की चुनौतियों पर चिंतन करती हिंदी लघुकथा | 112 |
| 44. | डॉ.विट्ठल शंकर नाईक<br>प्रा.सुषमा प्रफुल्ल नामे | हिंदी उपन्यासों में किन्नर विमर्श | 116 |
| 45. | प्रा.डॉ.प्रवीण कांबळे | लघुकथाओं में चित्रित नेताओं की चरित्र-हीनता | 119 |
| 46. | डॉ. सुनिता रामभाऊ हजारे | शिवानी की कहानी 'करिए छिमा' के सन्दर्भ में | 120 |
| 47. | प्रा. डॉ. संतोष विजय येरावार | आदिवासीयों की करुण गाथा – 'अल्मा कबूतरी' | 121 |
| 48. | अभिनव कुमार | हुल पहड़िया: पहाड़िया आदिवासियों के चिरकालीन स्वाधीन चेतना की साहित्यिक अभिव्यक्ति | 123 |
| 49. | प्रा. जे. बी. जाधव | मोहनदास नैमिशराय का उपन्यास,'ज़ख़्म हमारे में' दलित विमर्श | 125 |
| 50. | प्रा. व्यंकट अमृतराव खंदकुरे | 21 वे सदी के हिंदी गद्य साहित्य में बाजारवाद विमर्श | 128 |
| 51. | लक्ष्मी किसनराव मनशेट्टी | दलित जीवन की दर्दनाक दास्तान – मुक्तिपर्व | 130 |
| 52. | प्रा.प्रतापसिंग राजपूत | 21 वीं सदी के उपन्यास में चित्रित किसान जीवन | 133 |
| 53. | डॉ. मंत्री रामधन आडे | 21 वीं सदी का हिन्दी गदय साहित्य और स्त्री विमर्श | 135 |
| 54. | डॉ. विनय सु.चौधरी | 21 वीं सदी के हिंदी कथा साहित्य में दलित विमर्श | 138 |
| 55. | प्रा. संतोष तुकाराम बंडगर | 'डबल इनकम नो किड्स': महानगरीय नारी की बदलती पारिवारिक प्रवृत्तियाँ | 140 |
| 56. | प्रा. सुधाकर इंडी | रमणिका गुप्ता के उपन्यासों में आदिवासी स्त्री विमर्श | 142 |
| 57. | प्रा. विश्वनाथ भालचंद्र सुतार | हिंदी कविता में नारी लेखन के विविध स्वर | 145 |
| 58. | प्रा.डॉ.संभाजी रामू निकम | आधुनिक परिवेश में नौकरीपेशा स्त्री के प्रति देहवादी दृष्टिकोण :'कुत्ते' नाटक के संदर्भ में | 147 |
| 59. | किरण सोपान सोनवलकर | स्त्री विमर्श का नया कोण : कस्बाई सिमोन | 149 |
| 60. | संगिता तुकाराम सरवदे | नारी अंतर्मन को झकझोरती रचनाकार- कृष्णा अग्निहोत्री 'मैं अपराधी हूँ' के विशेष संदर्भमें | 151 |
| 61. | सचिन मधूकर गुंड | 'स्त्री जीवन का यथार्थ' :- 'मुन्नी मोबाईल' | 153 |

# आदिवासीयों की करुण गाथा – 'अल्मा कबूतरी'

प्रा. डॉ. संतोष विठ्ठल येरावार
देगलूर महाविद्यालय

'अल्मा कबूतरी आदिवासी जीवन केंद्रित मैत्रयी पुष्पा का उपन्यास है. आदिवासीयों को सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक स्थिती को उपन्यास में अत्यंत सशक्त रुप से उदघाटित किया हैं | आदिवासी जीवन की पीडा, त्रासदि, संग्राम एवं मानसिकता को उघाडा हैं | अल्माकबूतरी उपन्यास में आदिवासीयों की प्रथा, परंपरा, वेशभूषा, रहन सहन, खानपान, लोकगीत, लोककथा, मुहावरे, एवं मान्यताओं का अत्यंत प्रभावी वर्णन किया है | आदिवासीयों को किस प्रकार प्रशासन व्यवस्था, राजनीति एवं शहरी लोगोद्वारा लुटा जाता है, उन्हे किस प्रकार अपमानित किया जाता है, और विकृत मानसिकतासे उपजी घृणा से किस प्रकार प्रताडित किया जाता है |इस वास्तविकता को उपन्यास में उघाडा गया हैं | आदिवासी स्त्रीयों की पीडा और मनोदशा को भी उघाडा गया है | आदिवासी औरतों को अपनी वासना का शिकार बनाने वाली विकृत और घृणित मानसिकता को भी प्रस्तुत उपन्यास में अभिव्यक्त किया है |

अल्मा कबूतरी उपन्यास आदिवासी कबूतरा जाति पर आधारित उपन्यास हैं | कबूतरा घूमक्कडी करने वाली जाति है. आदिवासी अपना जीवन किसी के खेत में डेरा डालकर बिताते है | महुए के फूल और गुड की शराब बनाना उनका प्रमुख व्यवसाय है. चोरी करना, नाचगाना करना और अपना पेट भरने के लिए लोगो को लूटना इनका व्यवसाय होने के कारण कबूतरा जाति लोगों के घृणा और तिरस्कार का प्रमुख कारण हैं | आदिवासी जाति के औरतो का शोषण करना, उनको अपनी काम वासना का शिकार बनाना यह पुरुष व्यवस्था अपना अधिकार समजती हैं | जिसकारण कबूतरा स्त्रीयों की अवस्था अत्यंत दयनीय ओर विकृत हैं | भ्रमती करने के कारन अनेको पुरुषों की वासना का शिकार आदिवासी औरते बनती हैं | चोरी व्यवसाय से जुडे होने के कारण प्रशसनद्वारा भी निरपराध स्त्रियों का दोहन किया जाता हैं |

मंशाराम माते अपने पैतृक जमीन पर बसे कबूतरा जाति के लोगों को हटाने की उनके पिता की इच्छा को वासना के कारन पुरा नहीं कर पाता हैं | कदमबाई अत्याधिक सुंदर और कमसीन औरत है | उसे भोगने की लालसा वश वह उन्हें अपने खेतों में ही रहने देता हैं | कदमबाई के शरीर को पाने के लिए षडयंत्र रचता हैं | कदमबाई के देह का नशा उसे अपराधी बना देता है. जिसे मंशाराम जायज मानता हैं | वीस वर्ष की नाजुक, मदमस्त, मनमोहक, कदमबाई को पाने के लिए माते उसके पति जंगलिया को अपने ही घर में चोरी करवाता हैं और धोखे से उसकी हत्या करके कदमबाई की देह से अपनी कामवासना पुरी करता है | "वादे के हिसाब से वह पास आया, वह छाया को देखते ही मदहोश हो गई | गदराई हुई गेंहूँ की बालें पेट को गुदा-गुदा रही थी, गुनगुनी बाँहो ने उसका बदन बाँध लिया |.... हाय सदा घाघरा उतारता आता था, आज पहले चोली के बटन खोल रहा है | एकांत मे फुरसत पा गया ? याद नहीं कि घडियाँ गिनी-चुनी है ? कदम ने घाघरा खुद ही नीचे सरका दिया | बंद आँखो सें अपने ही गोरे बदन की छाया जगमगाई | आँखों पर रखे हाथों की उंगलियों से झाँकना चाहती थी कि गर्म साँसो ने होंठो पर कब्जा कर लिया | सारे डर,भय को दबाने के खातिर उसने अपने पुरुष को भींच लिया |[1]" मंशाराम माते के घिनौने षडयंत्र के कारन, एक आदिवासी की हत्या, एक आदिवासी स्त्री का लैंगिक शोषन और एक नाजायज औलाद का जन्म होता है | एक घिनोनी मंशा संपूर्ण परिवार को तितर – बितर कर देती है |

अल्मा कबूतरी के पिता रामसिंह की हत्या डाकू करते है, तत पश्चात दुर्जन कबूतरा अल्मा कबूतरी को धोखे से नारियों के व्यापारी सुरजभान को कुछ रुपयों में बेच देता है | अल्मा कबूतरी धीरज की सहायता से क्रुर एवं पशुतूल्य सुरजभान के कैद से भाग जाती है | और समाज कल्याण मंत्री श्रीराम शास्त्री के घर में पनाह लेती है . अल्मा कबूतरी अपने आप को राक्षस सम समाज व्यवस्था से बचाने के लिए अपना शरीर उपभोग के लिए मंत्री को दे देती है | अल्मा मंत्री जी के सामने नंगी खडी हो जाती है और अपने कांचन देह को मंत्री जी की बाँहो में सर्मपित कर रखेल बन जाने को मजबूर होती है | अल्मा कबूतरी जैसी पढी लिखी लडकी को भी समाज के कुछ घिनौने, वासनांध तत्व जीने नही देते है | इस यर्थाथ का चित्रण मैत्रेयी पुष्पा ने किया है . अल्मा कबूतरी जैसी पीडा भोगने के लिए अनेकों स्त्रीया मजबूर है. आदिवासी कबूतरा समाज में नार की स्थिती अत्यंत दयनीय है | कदमबाई और अल्मा कबूतरी दोनों जीने के लिए संघर्ष करती है और न चाहने पर भी रखेल बनने को मजबूर है |

अल्मा कबूतरी उपन्यास में मंशाराम से अश्लीलता की गंध आती है .वह अपने शरीर की भूख मिटाने के लिए कदमबाई को घिनोनी चाल से हासिल करता है | कदमबाई पति के हत्यारे से बार - बार शारिरिक संबंध रखने के लए मजबूर हैं क्युँ की वह उसके खेत में रहती है .और उसका कोई आधार नही है | "मंशारामा का हाथ जिस यात्रा को तय करने में लगा था, कदम उससे एकदम अनजाना बैठी रही. छूना, निरखना, भंचना और चुमना उसने मंशाराम के हवाले छोड दिया |"[2] मंशाराम के कदमबाई के साथ अनैतिक संबंध के कारन पत्नी से हररोज कलह होता. कदमबाई के साथ बदले की भावना ने आनंदी को अति क्रुर बनाया. आनंदी के जीवन में भी अस्थिरता, असंमजस्य, विरोध और संघर्ष की स्थिति आती है | उसका पति मंशाराम उसे छोड कर कबूतरा बस्ती में जाता

है | आंनदी भी अभाव ग्रस्त जीवन जीने को और पति के शोषन और अत्याचार सहने को मजबूर है | अल्मा कबूतरी उपन्यास में भूरी भी प्रस्थापित और तथाकथित सभ्य समाज के विकृत और खोखली मनसिकता का शिकार होती है | भूरी रामसिंह की माँ थी जिसने आदिवासी नियमों के विरुध्द अपने बेटे के हाथ में हत्यार और शराब के बजाए किताबे थमाई थी | परतु इसके लिए भूरी को कबूतरा कबिले के रोष का भागी बनना पडा तो दुसरी और कज्जा लोगो के नीचे बिछना पडा | भूरी ने अपने बेटे के उज्वल भविष्य के लिए अपने आप को बेचना तक पडा |

प्रशासन में व्याप्त भ्रष्टाचार,विकृती और विसंगती को भी उपन्यास में उजागर किया हैं पुलिस व्दारा आदिवासीयों का शोषण, अन्याय, अत्याचार किया जाता हैं | कबूतरा आदिवासी अपने उदर निर्वाह के लिए महूए के फुल से शराब बनाने का काम करते हैं परंतु पुलिसवाले आदिवासियों से पैसे ऐंटते हैं, उनसे जबरन वसूली करते हैं उन्हे मारते और पिटते है | जिस प्रशासन की जिम्मेदारी लोगों की रक्षा करना हैं वही पुलिसवाले आदिवासीयों के भक्षक बन जाते है भीखम् के कथन से पुलिस व्यवस्था के प्रताडना को अभिव्यक्त किया गया है “में नहीं जाऊँगा सिपाही पकड ले जाएँगे | एक बार नहीं, दो बार थाने जा चुका हूँ | बर्तन भाँडे घुलवा लो मालिश करा लें | पर वे तो ऐसा काम कराते हैं, कि .... चौपाये की तरह खडा कर देते हैं और फिर हमला”3 प्रशासन राजनीतिक व्यवस्था एवं सामाजिक व्यवस्था व्दारा आदिवासियों को प्रताडित किया जाता हैं |

आदिवासी जाति का स्थिर व्यवसाय एवं घर न होने के कारण उनका आर्थिक जीवन अतंत्य अभावग्रस्त, दयनीय एवं विषमताओं से पुर्ण होता हे | गरिबी, दिनता, हिनता एवं विपन्नता के कारण आदिवासीयों को अपना पेट भरने के लिए मजबुरन चोरी एवं लुटमार करनी पडती हैं | कदमबाई और अल्मा कबूतरी अपना शरीर तक पुरुषों को समर्पित कर देती हैं | कदमबाई के पति के मृत्यू के पश्चात उसका कोई सहारा नही था कदमबाई मंशाराम से शारिरिक संबंध उसके खेत में रहने हेतू रखती है | अल्मा को भी आर्थिक विपन्नता एवं सामाजिक कुरिति के कारण दर-दर भटकना पडता हैं | और वह भी आसरे के लिए शास्त्री से संबंध रखने को मजबुर हो जाती है | अर्थिक अस्थिरता के कारण बदहाली में जीवन व्यतिक करने को मजबूर आदिवासी आर्थिक लालच के कारण धर्म-परिवर्तन करने को मजबुर हो जाते हैं | ईसाई पादरी पिछडे आदिवासीयों को धन और भौतिक साधनो का लालच देते हैं और उनका धर्म – परिवर्तन करवाते हैं | आदिवासी भी अपने पेट की भुख मिटाने के लिए राजी हो जाते हैं | रामसिंह कहता हैं, “फिरंग लोग मुसलमान नहीं बनाते थे, पीठ पर हाथ फेरकर गिरजाघर ले जाते है हिंन्दु लोग मुँह फेर चुके थे तो वे घुमंतू कहाँ सहारा लेते ? गोरे साहब छोटी चीज को बडी नजरसे देखनेवाले ....कहते – तुम्हारा भगवान तुम्हें दगा दे गया, ईशु पर भरासो करो | रुपसिंह, विराटसिंह और प्रतापसिंह जैसे नामो ने तुम्हे गीदड की तरह भगाया है- जॉन डेविड सैमसन बनो | सीता -सावित्री और पदिमिनी बनक क्या मिला ? मेरी, मारिया और एनी बनकर पीने को पानी, पहने के लिए कपडे और खाने के लिए अन्न मिलेगा | ”4 आदिवासीयों की हिन्दु धर्म व्दारा प्रताडना, सामाजिक परंपरा,रिति-रिवाज, मान्यताओ के नामपर होनेवाला शोषण, प्रशासकीय अधिकारी व्दारा होनेवाली लूट-खसोट, उच्चजातियों व्दारा होनेवाली मानिसक त्रासदी आदि के कारण, आदिवासी धर्म-परिवर्तन के लिए मजबूर हो जाते है |

अल्मा कबूतरी उपन्यास में आदिवासी स्त्री त्रासदी को प्रखरतासे अभिव्यक्त किया हैं | दुर्जन अल्मा को देहव्यापारी सूरजभान को बेचता हैं अनेक यातना को भोगकर अल्मा श्रीराम-शास्त्री के घर जाती हैं जहाँ संतोले की बहू के कहनेपर वह अपने शरीर को मंत्री को भोगनेके लिए समर्पित कर देती हैं | अल्मा, कदमबाई पुरुषी व्यवस्था का शिकार हो अपना देहसमर्पण कर देती हे आदिवासी स्त्री को अनेक अपमान, यातना तिरस्कार और घृणा का शिकार होना पडता हैं | कबूतरा आदिवासी लोग गाँव – गाँव घुमकर डेरे लगाकर गुजर-बसर करते हैं | शराब बनाना, जंगली वस्तुओ का व्यापार, खेती, चोरी और डकेती कर पेट भरते है | जिसकारण कबूतरा आदिवासी, अभाव, पीडा, त्रासदी, अपमान, पताडना, शोषण और विकृती का शिकार होते है | अल्मा कबूतरी अपन्यास में अल्मा, कदमबाई, मशाराम माते, सूरजनभान, मंत्री श्रीरामशास्त्री, भुरी, जोधा, आंनदि, राणा, रामसिंह, दुर्जन कबुतरा आदि पात्रों के व्दारा आदिवासी जीवन की करुण गाथा को अभिव्यक्त किया गया हैं कबूतरा जाति के शोषण, अन्याय अत्याचार, प्रताडना घृणा और तिरस्कार की दासता ‘अल्मा कबूतरी’ उपन्यास हैं |

आदिवासी जीवन की वास्तविकता, प्रशसनिक शोषण, राजनीति के षडयंत्र, पुलिस के अत्याचार, उच्चजाति की कुपोषित मानसिकता, पुरुषप्रधान वासनांध वृत्ती आदिवासीयो के अस्थीर एवं अभावग्रस्त जीवन, स्त्री शोषण की विकृत परंपरा को, उपन्यास में उघाडा गया है मैत्रेयी पुष्पा का अल्मा-कबुतरी अतंत्य सशक्त उपन्यास हैं

**संदर्भ सूची :**


1) हिंन्दी आदिवासी जीवन केंद्रित उपन्यासो का समीक्षात्मक अध्ययन, प्रो.बी.के. कलसवा पृ.211
2) अल्मा-कबूतरी-मैत्रेय पुष्पा – पृ.
3) अल्मा – कबूतरी - मैत्रेय पुष्पा - पृ. 45
4) वही- पृ. 229-30


Dr. Anil Chidrawar
I/C Principal
A.V. Education Society's
Degloor College, Degloor Dist.Nanded